मोरंगे

जुलाई–अगस्त, 2026



अनुक्रम

गीत कविताएँ

- हमने पी माजा
- बंदूर और मुर्गी
- आसमान में क्या है
- गाँव की सैर
- आसमान में सूरज चमके
- बकरी आई

कहानियाँ

- चालाक लोमड़ी
- हाथी और ऊँट
- शरारती बच्चा

याद की धूप छाँव में

- समझदार गाय
- लपलपो और लपलपी

बात लै चीत लै

- गट्टू और बट्टू

सम्पादन : राजेश कुमावत
डिज़ाइन : लोकेश राठौर
वितरण : अंकुश शर्मा
आवरण चित्र : चन्द्रा बावरी, उम्र–15 वर्ष, नवरंग शिक्षण केन्द्र बावरी बस्ती, स.मा.।
वर्ष 18 अंक 193–194

प्रबंधन
विष्णु गोपाल
निदेशक
ग्रामीण शिक्षा केन्द्र समिति

पत्रिका का पता
मोरंगे
ग्रामीण शिक्षा केन्द्र
एच–1, फर्स्ट फ्लोर, राजनगर कॉलोनी,
मानटाऊन, सवाई माधोपुर, राजस्थान
322001

'मोरंगे' का प्रकाशन 'यात्रा फाउण्डेशन' आस्ट्रेलिया, के वित्तीय सहयोग से हो रहा है।

गीत कविताएँ

हमने पी माजा

हमने पी माजा
शेर जंगल का राजा
शेर गया दिल्ली
दिल्ली से लाया दो बिल्ली
एक बिल्ली थी कंजूस
दूसरी पीती थी जूस
जूस था मीठा
उसे पी गया चींटा।

प्रिंस गुर्जर, उम्र–11 वर्ष, उदय सामुदायिक पाठशाला गिरिराजपुरा।

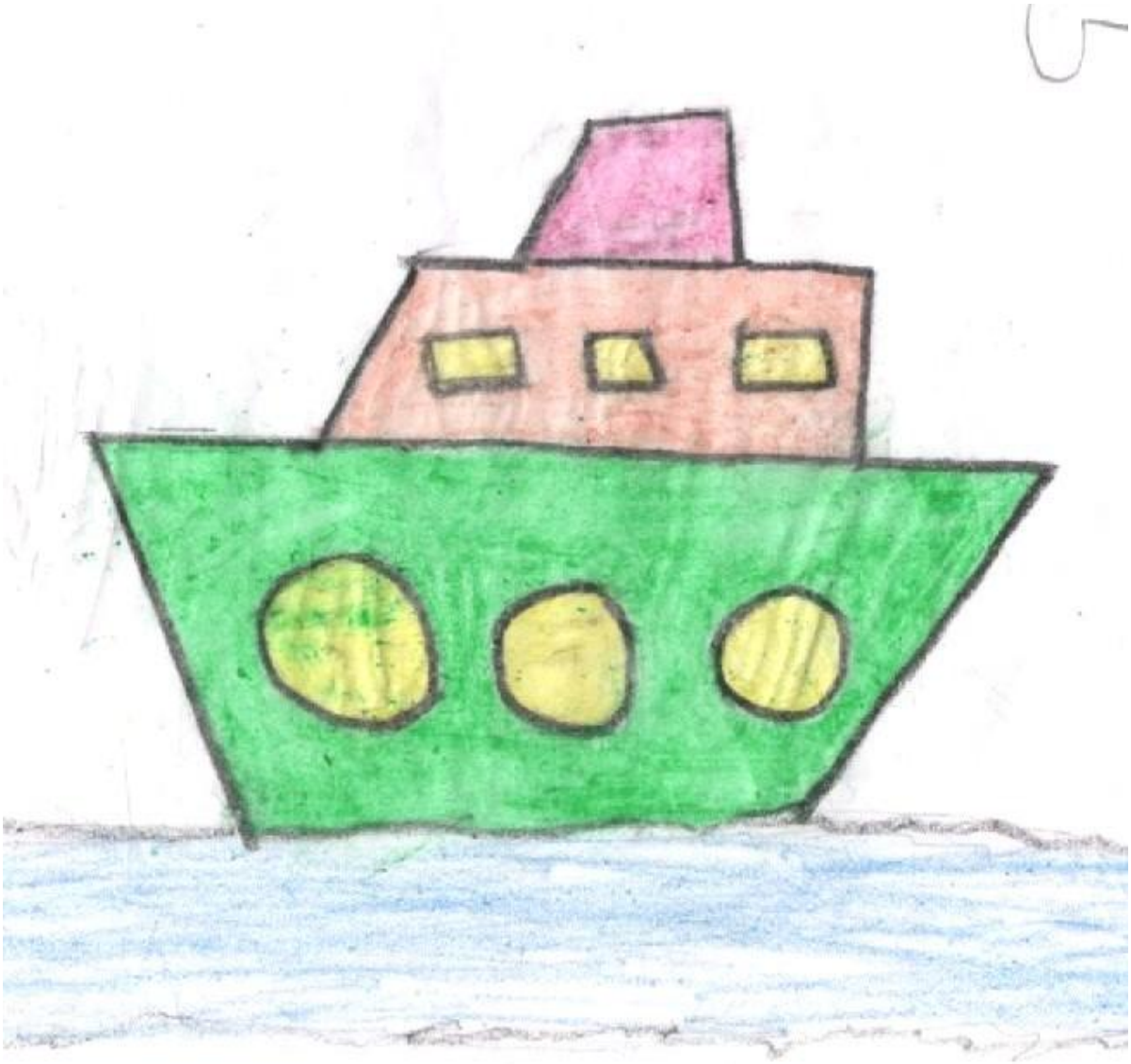


आमरिन बानो, कक्षा–9, उमंग शिक्षण केन्द्र मखौली

बंदर और मुर्गी

एक बार की बात थी
बंदर और मुर्गी थे साथ
खाना खाकर सो रहे थे
सपनों में वे खो रहे थे
बार–बार ये कह रहे थे
चांद तोड़ कर लायेंगे
उसका बाजा बजायेंगे
सबको फिर नचाएंगे।

रामभजन योगी, शिक्षक, उदय सामुदायिक पाठशाला गिरिराजपुरा।

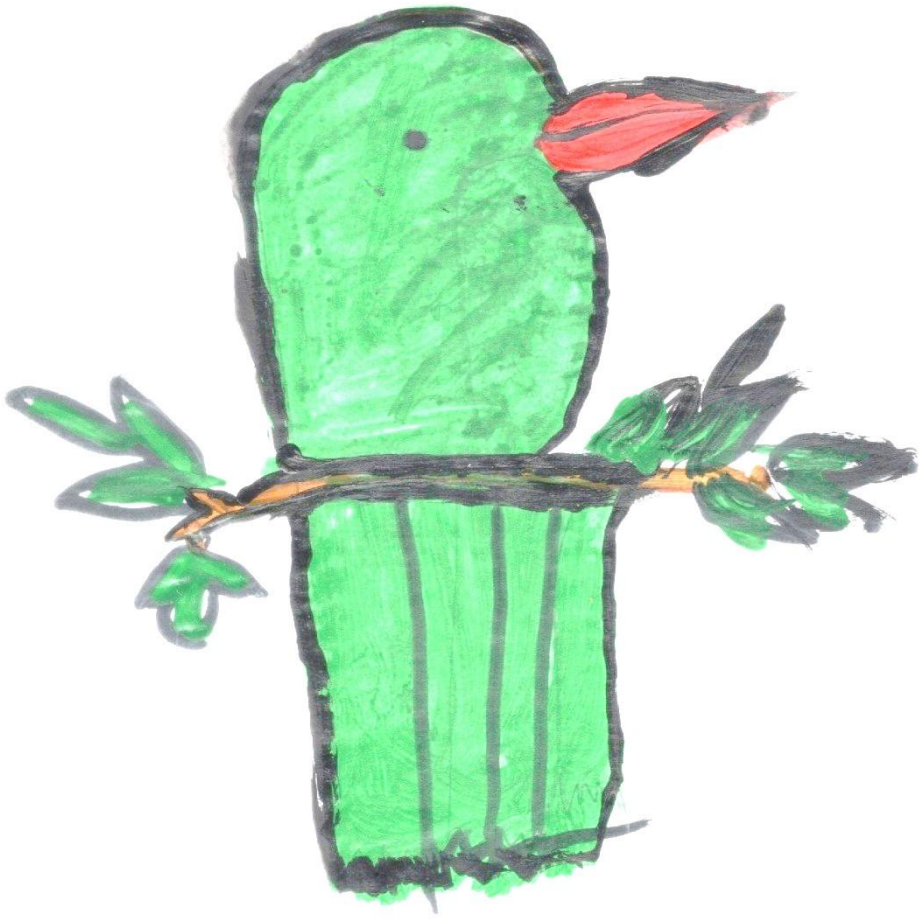


पवन बंजारा, कक्षा–5, नवरंग शिक्षण केन्द्र बहरावण्डाकलां

आसमान में क्या है?

आसमान में क्या है? आसमान में तारे हैं,
तारे कितने प्यार और न्यारे हैं।
आसमान में क्या ह? आसमान में पंछी हैं,
सारे पंछी निराले और मतवाले हैं।
आसमान में क्या है? आसमान में इन्द्रधनुष है,
इन्द्रधनुष मनमोहक और सतरंगी है।
आसमान में क्या है? आसमान में बादल हैं,
बादल नीले, काले, पीले और लाल–लाल हैं।
आसमान में क्या है? आसमान में चांद–सूरज हैं,
चांद–सूरज गरम, नरम और उजयारे हैं।

आयशा मीना, कक्षा–5, उदय किरण फैलोशिप सेंटर सांवलपुर।

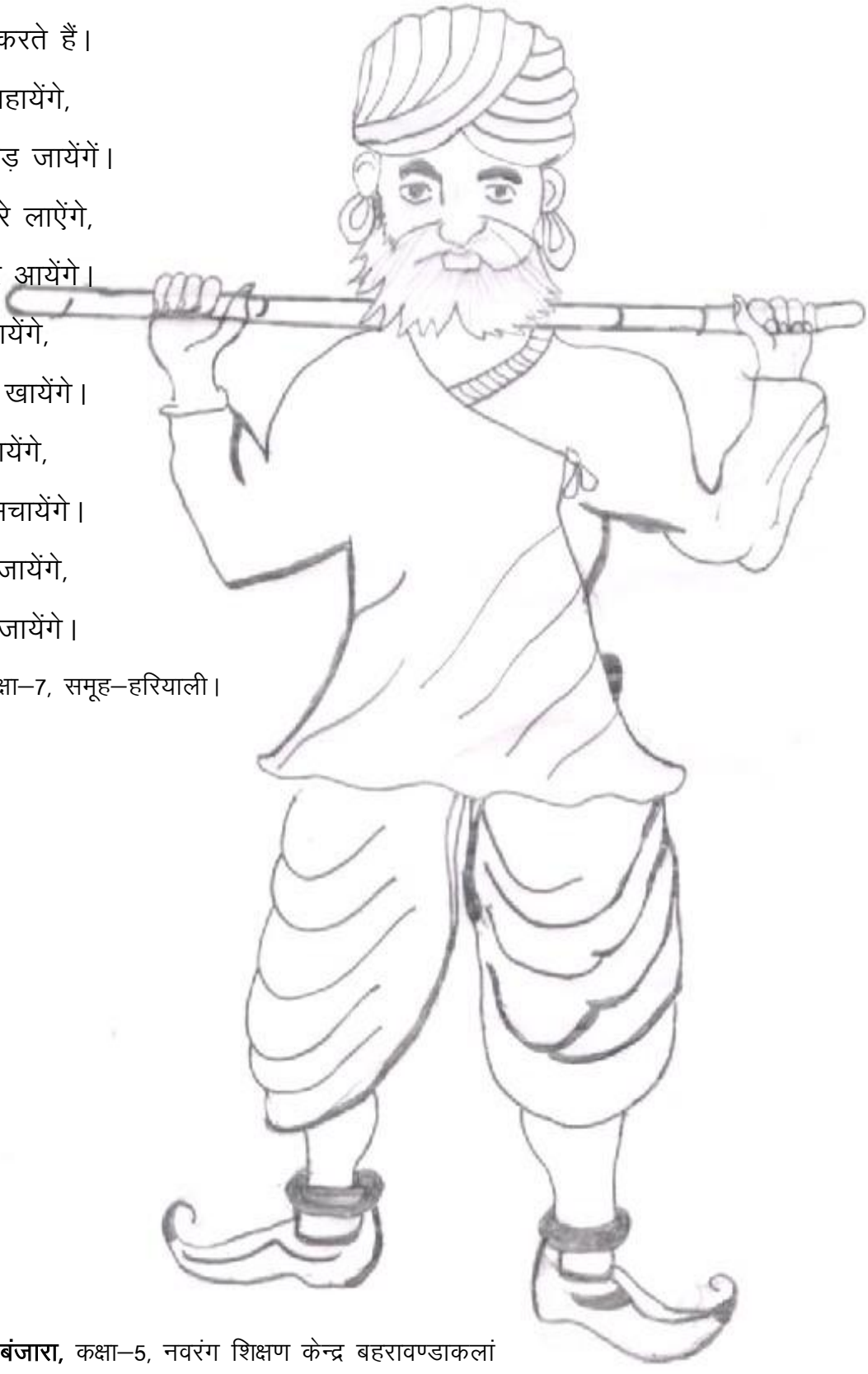


प्रतिज्ञा माली, कक्षा–10, उमंग शिक्षण केन्द्र शेरपुर

गाँव की सैर

चलो दोस्तों चलते हैं,
गाँव की सैर करते हैं।
नदी में खूब नहायेंगे,
आसमान में उड़ जायेंगें।
छोटे–छोटे तारे लाऐंगे,
फिर धरती पर आयेंगे।
मौज खूब उड़ायेंगे,
फिर रसगुल्ले खायेंगे।
खाते–खाते गायेंगे,
मिलकर धूम मचायेंगे।
पेड़ों पर चढ़ जायेंगे,
सब चट कर जायेंगे।

अजय बैरवा, कक्षा–7, समूह–हरियाली।

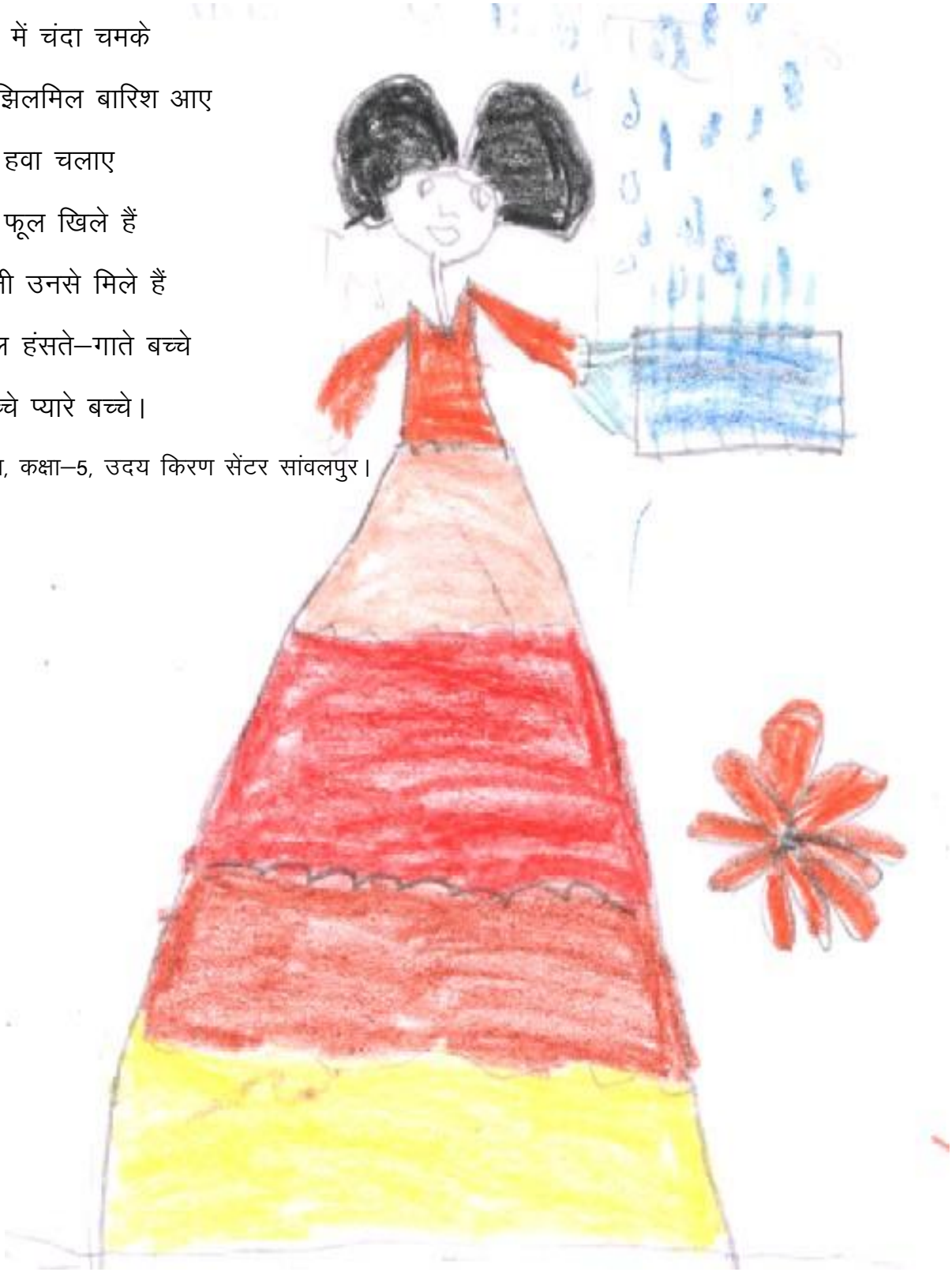


लक्ष्मी बंजारा, कक्षा–5, नवरंग शिक्षण केन्द्र बहरावण्डाकलां

आसमान में सूरज चमके

आसमान में सूरज चमके
नीले गगन में चंदा चमके
झिलमिल झिलमिल बारिश आए
ठंडी–ठंडी हवा चलाए
रंग–बिरंगे फूल खिले हैं
तितली रानी उनसे मिले हैं
खिल–खिल हंसते–गाते बच्चे
मन के सच्चे प्यारे बच्चे।

आयशा मीना, कक्षा–5, उदय किरण सेंटर सांवलपुर।



मोनिका, उम्र–5 वर्ष, उदय सामुदायिक पाठशाला कटार

बकरी आई

बकरी आई–बकरी आई

साथ में अपने बच्चे को लाई

बच्चे को फिर दूध पिलाई

बकरी चलने चारा गई

दिनभर में वो फुल हो गई

बच्चे की फिर आई याद

चल दी घर को उसके बाद

मैं, मैं, मैं, मैं की आवाज

बकरी गई बच्चे के पास

फिर आई मैं, मैं की आवाज

बच्चे को पिलाया जी भरके दूध

दोनों सो गए फिर बेसुध।

लवकुश बैरवा, कक्षा–8, उदय सामुदायिक पाठशाला कटार।



अंकिता और मुस्कान, कक्षा–5, उदय किरण शिक्षण केन्द्र केन्द्र खवा

कहानियाँ

चालाक लोमड़ी

एक जंगल में एक चालाक लोमड़ी रहती थी। एक दिन लोमड़ी को बहुत तेज प्यास लगी। वह दौड़ती हुई नदी में पानी पीने पहुँची। पानी पीते–पीते वह सोचने लगी कि मैंने पानी तो पी लिया पर मुझे बहुत तेज भूख भी लग रही है। वह भोजन की तलाश में आगे बढ़ती रही। कुछ ही देर बाद उसने देखा कि एक भैंस घांस चल रही थी। उसने सोचा कि आज भैंस का शिकार कर लूं। उसने चुपसे से अपने भोजन को दूर से निहारा। उसे महसूस हुआ कि भैंस बड़ी और बहुत ही गुस्सैल है। उसने मन ही मन सोचा कि, यहाँ से चलने में ही भलाई है। अगर कहीं गलती से भी भैंसे की नजर मेरे ऊपर पड़ गई तो वह मुझे मार ही डालेगी।

वह वहाँ से चली गई और कुछ दूर आगे बढ़ती रही तभी उसने देखा कि, एक भालू मधुमक्खी के छत्ते पर शहद खाने के लिए हमला कर रहा था। जब भालू ने शहद खाना शुरू किया था तब उसे देखकर लोमड़ी के मुँह में पानी आ गया था। वह शहद खाने के लिए तरकीबें सोचने लगी थी। उसने सोचा कि भालू से थोड़ा शहद मांग लूं। पर वह मुझे देगा ही नहीं। क्यों ना भालू से झूठ बोलकर उसे ही भगा दूं। तभी वह भालू के पास जाकर बोली, भालू भाई, भालू भाई थोड़ी दूर एक भैंस आपकी चुगली कर रही है। मैंने उसे आपके बारे में चुगली करते हुए अपने कानों से सुना है। आप तो मेरे आदरणीय हो, सोचा कि मैं आपको बता दूं। यह सुनकर भालू लाल–पीला हो गया और गुस्से में बोला कि उस भैंस की इतनी हिम्मत हो गई जो वह मेरी चुगली करने लगी। मैं उसे अभी जाकर मजा चखाता हूँ।

भालू ने लोमड़ी से कहा, तुम मेरे शिकार का ध्यान रखना। लोमड़ी ने यह सुनकर बड़े ही प्यार से सर हिलाया और कहा कि मैरे होते हुए आपके शहद को कोई छू भी नहीं सकता है। आप निश्चित होकर भैंस की अकड़ ठिकाने लगा कर आराम से आइये। मैं आपके शहद की पहरेदारी पूरी ईमानदारी से करूंगी। यह सुनकर भालू उस भैंस की तलाश में चला गया। भालू के जाते ही लोमड़ी में लार टपकाते हुए बड़े ही चाव से पूरे शहद को चट कर दिया। थोड़ी देर बाद जब भालू वापस आया तब तक लोमड़ी बहुत दूर चली गई थी और भालू उसे ढूंढता ही रहा पर लोमड़ी उसे नहीं मिली।

शाइस्ता सैनी, कक्षा–7, उमंग सेंटर शेरपुर।

हाथी और ऊँट

बहुत पहले हाथी और ऊँट एक जंगल में रहा करते थे। उन दोनों में बहुत अच्दी मित्रता थी। वो दोनों जहाँ भी जाते एक साथ जाते, साथ ही खाना खाते और मुसीबत के समय एक दूसरे की मदद करते और खुश रहते। इनकी दोस्ती के चर्चे पूरे जंगल में दूर–दूर तक थे। उनकी यह घनिष्ठ मित्रता को देखकर जंगल के ज्यादातर जानवर उनसे जलते थे। सियार भी उनमें से एक था। सियार उनकी दोस्ती को तो देख रहा था, वह सोच रहा था कि जब इनकी दोस्ती इतनी मजबूत है तो दुश्मनी कितनी गहरी होगी। यदि ऐसा हो जाए तो मजा आ जाएग। एक दिन सियार ने सोचा कि हाथी और ऊँट के बीच फूट डालकर इन्हें अलग कर देता हूँ और इन्हें एक दूसरे के दुश्मन बना देता हूँ। यह देखकर मुझे बहुत मजा आयेगा। सियार तुरंत उतरा सा मुँह लेकर हाथी के पास गया और बोला कि आप और ऊँट अच्दे दोस्त हो क्या? हाथी ने कहा कि हाँ, अच्छे दोस्त हैं। सियार बोला लेकिन मैंने तो ऊँट को गधे के साथ देखा है और वो दोनों आपकी बुराई कर रहे थे। हाथी को यह सुनकर गुस्सा आया और बोला कि ऊँट मेरे साथ धोखा कर रहा है। मैं उसे नहीं छोडूंगा। इसके बाद सियार वहां से खुश होकर चला गया और खुद से ही बोला कि अपनी योजना सफल हुई किस्तु अभी ऊँट के पास भी चलना चाहिए, नही ंतो गड़बड़ हो जायेगी। सियार ऊँट के पास गया और बोला, आप और हाथी अच्छे दोस्त हो क्या? ऊँट ने कहा हाँ, इसमें क्या शक है, हम दोनों बहुत ही अच्छे दोस्त हैं और रहेंगे। यह सुनकर सियार बोला, लेकिन मैंने तो हाथी को गधे के साथ देखा था। वो दोनों तो आपकी बुराई कर रहे थे। यह सुनकर पहले तो मुझे भी बहुत गुस्सा आया था। मैंने सोचा कि यह बात अति शीघ्र ऊँट भाई को बतानी चाहिए। इसलिए मैंने आपको बता दी है। यह सुनकर ऊँट आग बबूला हो गया और बोला, हाथी ने मेरे साथ धोखा किया है। मैं उसे छोडूंगा नहीं और तुरंत उसके पास जाता हूँ। उधर हाथी भी गुस्से में ऊँट से मिलने आ रहा था और ऊँट भी उतने ही गुस्से में हाथी के पास जा रहा था। दोनों ही बीच रास्ते में मिल गए। यह सब सियार चुपके से एक पेड़ के पीछे छिपकर देख रहा था कि अब मजा आएगा। ऊँट और हाथी लड़ने की एक्टिंग करने लगे। हाथी ने जोर से पेड़ के टक्कर दी और पेड़ गिर गया। उस पेड़ के नीचे सियार दब गया और पियाऊँ–पियाऊँ की आवाज आई। मुझे बचाओ, मुझे बचाओ। हाथी और ऊँट को अपनी दोस्ती पर पूरा भरोसा था।

उन्होंने सियार की चापलूसी को भांप लिया था। उधर सियार दर्द से चिल्ला रहा था। ऊँट और हाथी ने उसे पेड़ के नीचे से निकाल दिया और बोले की जा मजे कर।

मोनिका गुर्जर, उम्र–11 वर्ष, उदय सामुदायिक पाठशााला गिरिराजपुरा।



मुरारी लाल, शिक्षक, उदय सामुदायिक पाठशाला कटार

शरारती बच्चा

एक जंगल में मोर और मोरनी अपने छोटे बच्चे के साथ रहते थे। उनका बच्चा बहुत नटखट और शरारती था। जब भी उसे गुस्सा आता वह घर के सामानों को तोड़–फोड़ देता और बिना सोचे–समझे कहीं भी निकल जाता। माता–पिता उसकी इस आदत से बेहद परेशान थे और उसे सुधारना चाहते थे। उन्होंने विचार किया कि इसे कुछ दिनों के लिए नानी के घर पर छोड़ आते हैं, शायद वहां रहकर इसमें कुछ सुधार हो जाए।



अगले ही दिन सुबह मोर–मोरनी अपने बच्चे को लेकर घनें जंगल के रास्ते नानी के घर के लिए निकल पड़े।

सोनिका गुर्जर, कक्षा–5, उदय किरण शिक्षण केन्द्र बाढ़पुर

चलते–चलते माता–पिता ने अपने बच्चे को समझाया। यह बहुत बड़ा और घना जंगल है। यहाँ कई खबरनाक जंगली जानवर रहते हैं। इसलिए तुम हमारा हाथ पकड़े रहना और हमारे साथ ही चलना। लेकिन शरारती बच्चे पर इन बातों का कोई असर नहीं हुआ। मौका मिलते ही उसने माता–पिता का हाथ छुड़ाया और कहीं दूर जाकर छिप गया। मोर–मोरनी उसे आवाजें देते रहे और ढूंढते रहे पर वह जान–बूझकर सामने नहीं आया क्योंकि उसे अपने माता–पिता को परेशान करने में मजा आ रहा था।

धीरे–धीरे शाम ढली और जंगल में अंधेरा छाने लगा। मोर–मोरनी उसे ढूंढते–ढूंढते बहुत दूर निकल गए। अब वह बच्चा जंगल में अकेला रह गया था। चारों तरफ घना अंधेरा और सन्नाटा छा चुका था। थोड़ी ही देर में अचानक बिजली कड़कने लगी और जंगली जानवरों की भयानक आवाजें पूरे जंगल में गूंजने लगी। डर के मारे कांपता हुआ बच्चा एक पेड़ के नीचे दुबक कर बैठ गया। उसे जोरों की भूख–प्यास भी लग रही थी। भीगते और रोते हुए उसने सोचा, माता–पिता ने मुझे कितना समझाया था कि हाथ मत छोड़ना, लेकिन मेरी इस नादानी और शरारत ने आज मुझे कितनी बड़ी मुसीबत में डाल दिया। उसे अपनी गलती पर बहुत पछतावा हो रहा था। अब वह रोते–रोते सुबह होने का इंतजार करने लगा।

जैसे ही सुबह होने लगी, वह डरते–डरते अपने घर की तरफ लौटने लगा। रास्ते में उसे अपने माता–पिता आवाज लगाते हुए ढूंढते मिल गए। उन्हें देखकर ऐसा लग रहा था मानो वे दोनों भी पूरी रात बिना पलक झपकाए उसी जंगल में भटकते हुए अपने बच्चे को खोज रहे थे। इस बार बच्चे ने जरा भी देर नहीं कि और वह दौड़कर अपने माता–पिता से लिपट गया। उसने रोते हुए अपनी गलती की माफी मांगी और आगे से कभी ऐसी शरारत न करने का वादा किया। मोर–मोरनी ने भी अपने कलेजे के टुकड़े को गले से लगा लिया और फिर सब खुशी–खुशी रहने लगे।

लक्ष्मी नायक, कक्षा–7, उदय सामुदायिक पाठशाला कटार।

याद की धूप छाँव में

समझदार गाय

एक लड़का रोजाना गाय चराने जाता था। वह रोज सुबह जाता और शाम को घर आता था। एक दिन बहुत तेज गर्मी थी। वह लड़का अकेले ही जंगल में अपनी गाय चराने गया। उस दिन वह अपने साथ पानी ले जाना भूल गया था। दोपहर के समय उसे बहुत प्यास लगी। वह जंगल में इधर–उधर पानी ढूंढने लगा। बहुत देर बाद उसे एक कुआ दिखाई दिया। वह कुएँ के पास गया। कुएँ के पास एक बाल्टी और रस्सी रखी थी। उसने सोचा ये बाल्टी कुएँ में डालकर पानी खींच लेता हूँ। जिससे मैं भी पानी पी लूंगा और गाय को भी पिला दूंगा। उसने रस्सी डाली। जैसे ही बाल्टी भरी वह रस्सी को ऊपर खींचने लगा लेकिन बाल्टी बहुत भारी थी। खींचने के चक्कर में उसका पैर फिसल गया और रस्सी के साथ वह लड़का कुएँ में गिर गया। वह जोर–जोर से चिल्लाने लगा। बचाओ–बचाओ, पर उसकी सुनने वाला जंगल में कोई नहीं था। उसी समय उसकी गाय जो कुएँ के पास खड़ी थी वह दौड़कर घर की ओर भागी। घर वालों ने देखा कि गाय इतनी जल्दी आ गई परन्तु लड़का नहीं आया। घरवाले गाय के साथ वापस जंगल की ओर भागे। गाय उनको उस कुएँ के पास ले गई। घरवालों ने लड़के की आवाज कुएँ से सुनी तो उन्होंने कुएँ में देखा तो पाया कि लड़का तो कुएँ के अंदर गिरा हुआ था। उन्होंने मिलकर उसे कुएँ से बाहर निकाला। सभी ने गाय को धन्यवाद दिया।

मोनिका गुर्जर, उम्र–11 वर्ष, उदय सामुदायिक पाठशाला गिरिराजपुरा।



भोला शंकर, शिक्षक, उमंग शिक्षण केन्द्र रांवल

लपलपो और लपलपी

मेरे कानों में डम–डम–डम डमरू के बजने की आवाजें आई। मैं अचानक से पलंग से खड़ी हो गई। मैंने देखा कि सभी उसी आवाज की दिशा में भागे जा रहे थे। यह आवाज खेल दिखाने वाले मदारी की थी। मैंने यह आवाज बहुत दिनों बाद सुनी। जैसे ही वहाँ पहुँची तो देखा मदारी के चारों ओर लोग खड़े हुए थे। मैं उनके बीच में घुस गई। हांपते–हांपते मैंने देखा कि मदारी आज सांप का खेल दिखाने वाला है। सपेरे के पास दो टोकरियाँ थी। एक टोकरी में से उसने एक बहुत बडा काला सांप निकाला और उसे नचाने लगा। उसका नाम बताया कि यह रांड का सांड धर्मेन्द्र है और यह एक बहुत बड़ा और मोटा कोबरा था। उसने कहा इसके दोस्त नाग–नागिन हैं। मैंने मन ही मन सोचा कौनसे नाग–नागिन? मदारी ने दूसरी टोकरी खोली तो उसमें दो सांप (नाग–नागिन) थे। एक का नाम लपलपो और दूसरे का नाम लपलपी था। नाग लपलपो और नागिन लपलपी थी। मतलब ये उनके नाम थे। सपेरा कभी उन्हें नचाता तो कभी लड़ा रहा था। तीनों में से सबसे बड़ा रांड का सांड धर्मेन्द्र था। उससे छोटा लपलपो और सबसे छोटी लपलपी थी। लपलपी एक सबसे छोटी सांपणी थी। तीनों सांप बार–बार सीईईईईई–सीईईईईई की आवाज के साथ जीब लपलपा रहे थे। सपेरा भी बार–बार रांड का सांड धर्मेन्द्र, लपलपा–लपलपी खेल दिखाते–दिखाते नाम जल्दी–जल्दी रटे ही जा रहा था। तीनों साँपों के नाम मुझे बहुत ही अच्छे लगे थे। मैं इन नामों को सुनकर अपनी हंसी नहीं रोक पाई। पूरे खेल में मुझे बहुत हंसी आई और बहुत ही मजा भी आया। तीनों सांपों की दोस्ती बहुत अच्छी थी और सपेरा भी बहुत अच्छा था। सपेरे ने भी बहुत अच्छा नाटक दिखाया था।

प्रियंका गुर्जर, फैलो, उदय किरण फैलोशिप सेंटर भैरूपुरा।



मूर्ति गुर्जर, कक्षा–8, उदय सामुदायिक पाठशाला गिरिराजपुरा

भाषा की सहेलियाँ, बूझो यार पहेलियाँ

1. कटोरे पर कटोरा बेटा बाप से भी गोरा?
2. बीन बजाता आता है, खून पी उड़ जाता है?
3. लाल लाल तवा, सोने से मढा, पूरब से आया, पश्चिम को गया?
4. सदा धूप से तुम्हें बचाऊँ वर्षा में भी काम आऊँ?
5. वह कौनसी कली है जो बागों में खिलती पर घर की दीवारों पर भी खिलती है?

गोविन्द नायक, कक्षा–8, उदय सामुदायिक पाठशाला कटार।



मुस्कान प्रजापत, कक्षा–5, उदय किरण फैलोशिप सेंटर आमली

चुटकले

1. पप्पू – पापा एक डीजे मंगवा दो।

   पप्पू के पापा – नहीं, तुम रात में सबको परेशान करोगे।

   पप्पू – नहीं पापा, रात में सब सो जायेंगे तब बजाऊंगा।

2. शादी में रवि काफी देर से खाना खा रहा था। किसी ने पूछ लिया कितना खाओगे? वो बोला मैं भी खाते–खाते परेशान हो गया हूँ परन्तु कार्ड में लिखा है खाना खाने का समय 7 से 10 बजे तक है।

विजय गुर्जर, कक्षा–7, उदय सामुदायिक पाठशाला गिरिराजपुरा।



नरेश गुर्जर, कक्षा–6, उदय सामुदायिक पाठशाला गिरिराजपुरा

बात लै चीत लै

गट्टू और बट्टू

गट्टू और बट्टू दो भाई थे। अपने घर में वो दोनों भाई आराम से रह रहे थे और घर के पास ही एक विशाल समुद्र था। वो दोनों भाई समुद्र की गीली रेत और पास के तालाब की चिकनी मिट्टी को मिलाकर अच्छी–अच्छी मूर्तियाँ बनाने लगे थे। बट्टू स्वभाव से दयालू और भोला–भाला था। गट्टू समझदार और ईमानदार था जो बट्टू का ध्यान रखता था। एक दिन जब दोनों भाई समुद्र किनारे मूर्तियाँ बना रहे थे तब बट्टू अचानक से चक्कर खाकर गिर गया और बेहोश हो गया। यह देखकर गट्टू के होश उड़ गए। वह घबरा गया। गट्टू तुरंत अपने भाई बट्टू को अपनी पीठ पर बैठाकर पास ही रहने वाले वैद्य जी के पास ले गया। वैद्य जी ने बट्टू की हाथ की नाड़ी पकड़कर चेक की और गट्टू के पास आ गए। गट्टू ने पूछा कि वैद्य जी क्या हुआ मेरे भाई को? वैद्य जी ने कहा, कि तुम्हारे भाई बट्टू ने बहुत दिनों से कुछ खाया पिया नहीं है, इसलिए यह बहुत ही कमजोर हो गया है।

यह सुनकर गट्टू ने हैरानी से कहा कि ऐसा कैसे हो सकता है? मैं तो रोज खाना बनाकर उसकी थाली में रखकर काम पर जाता हूँ। वापस आने पर उसकी थाली भी खाली मिलती है। मुझे तो लगता है बट्टू खाना तो खाता है। वैद्य जी ने बट्टू के मुँह पर पानी की छींटे मारे। पानी की छींटों से बट्टू को होश आ गया और वह बैठा हो गया। गट्टू ने तुरंत बट्टू से पूछा कि सच–सच बताओ कि इतने दिनों से मैं जो तुम्हारे लिए खाना बना रहा हूँ, वह कौन खाता है?

यह सुनकर बट्टू सहम सा गया। अपने आप को घिरा हुआ पाकर बट्टू ने एक राज की बात बताई। कुछ दिन पहले जब मैं समुद्र के पास खेल रहा था तब मैंने देखा कि एक जलपरी समुद्र से उछल कर हमारे घर के पास आ गिरी थी। वह पानी के बिना छटपटा रही थी। मैंने उस जलपरी की जान बचाने के लिए एक छोटा सा तालाब बना दिया। मैं रोज समुद्र से पानी भर कर लाता और इस तालाब में डाल देता था। जब मैंने देखा कि जलपरी तो बहुत भूखी है और यह तो मर जाएगी इसलिए मैरे हिस्से का भोजन में चुपके से इस जलपरी को खिला देता था। मैंने सोचा कि चाहे कुछ भी हो जाए, जब मैं इसके लिए समुद्र तक एक सुरंग नहीं बना लेता तब तक इसकी पूरी देखभाल करूंगा।

बट्टू की बात सुनकर गट्टू की आँखें भर आई। उसने बट्टू को अपने गले से लगाया और कहने लगा कि जब हम दोनों भाई मिलकर इस जलपरी को उसके घर वापस पहुँचायेंगे। तभी हम चेन की साँस लेंगे।

दोनों भाइयों ने मिलकर खूब दिनरात मेहनत की और समुद्र तक सुरंग खोद डाली। उन्होंने जलपरी को उस सुरंग से वापस समुद्र तक पहुँचा दिया। जलपरी मुस्कुराई और बोली कि तुम दोनों भाई बहुत ही अच्छे और सच्चे हो। तुमने मेरी जान बचाई है। जलपरी ने दोनों भाइयों को 100 कीमती मोती उपहार में दिए और बोली कि आप इनको बेच कर अपने लिए एक सुंदर सा घर बना लेना। गट्टू और बिट्टू ने जलपरी से केवल 50 मोती ही लिए और बोले कि हमारे लिए इतने ही पर्याप्त हैं। बाकि मोती आप अपने पास रखो। हम अपनी मेहनत से पैसे कमाकर अपना जीवन चलायेंगे। इसके बाद जलपरी गहरे समुद्र में चली गई। इसके बाद दोनों भाइयों ने एक सुंदर सा घर बनाया और सोचने लगे कि शायद कभी जलपरी का हमसे मिलने का मन करे तो वह आराम से आ जाया करेगी। इसलिए उस तालाब को भी ठीक करवाया। इतना होने के बाद भी उन्होंने मूर्तियाँ बनाने का काम कभी नहीं छोड़ा। वो रोज अच्छी–अच्छी मूर्तियाँ बनाते और उन्हें बाजार में बेचकर पैसे कमाते। इस तरह वो दोनों भाई अपना जीवन बिताने लगे। रोज तालाब पर बैठकर जलपरी का इंतजार करते।

प्रिया, कक्षा–8, उदय सामुदायिक पाठशाला गिरिराजपुरा।

पहेलियों के जवाब –

1. नारियल
2. मक्का
3. सूरज
4. छतरी
5. शिपकली



वंश बैरवा, कक्षा–2, उदय सामुदायिक पाठशाला कटार